अहसास का सफर

रजना भरतीया

पी. आर. पब्लिकेशन्स, गुवाहाटी

	रजना भरतीया
प्रथम सस्करण	1997
प्रकाशक	पी आर पब्लिकेशन्स भरतीया इटरप्राइजेज टोकोबाड़ी रोड, गुवाहाटी 781001 (असम)
सज्जा	विकास चक्रवर्ती
मूल्य	70 00
लेज़र टाइपसेट	विकास कम्प्यूटर्स नवीन शाहदरा दिल्ली 110052
मुद्रक	विकास ऑफसेट नवीन शाहदरा दिल्ली 110052

AHASAS KA SAFAR *A collection of Poems Ghazals and Songs* written by Ranjana Bharatiya and published by P R. Publications Guwahati



मेरे बाबूजी के
पावन चरणो मे समर्पित है
यह 'अहसास का सफर'
वह सफर जिसका पहला कदम
मैने उनकी अगुली थामकर बढाया

आत्मकथ्य

अपने बारे मे कुछ लिखना रचनाकार के लिए सकोच का विषय होता है, क्योकि रचनाकार का सच्चा परिचय तो उसकी रचना ही देती है। मे पद्य विधा मे अपने मनोगत विचारो को व्यक्त करती रही हूँ। मेरा लेखन अनायास ही होता रहा है। जीवन के उतार-चढाव, सामाजिक सरोकार और सवेदनशील मन से उपजी रचनाएँ पाठको की कसोटी पर ही साथक कहला पाएँगी।

सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर देखा जाए, तो मे हरगिज रचनाकार नही बन सकती थी। मेरे पिताजी की प्रेरणा ही एकमात्र कारण रही हे, जिससे मेरे अतर मे कला, सगीत एव साहित्य के प्रति रागात्मक आकर्षण का भाव पेदा हुआ। पिताजी के सस्कारो ने ही मुझे निरतर रचनात्मक ऊर्जा से भरपूर रखा है।

'अहसास का सफर' आपके हाथो में सोपते हुए मे स्मरण करती हूँ अपने परिवार के सदस्यों, गुरुजनो एव मित्रो का, जिनके सहयोग, समीक्षा, प्रेरणा एव मार्गदर्शन के विना 'अहसास का सफर' पूरा नहीं हो पाता। उनके लिए औपचारिक रूप से धन्यवाद ही कहना पर्याप्त नही होगा। सभवत कृतज्ञता को कभी-कभी शब्दो की सीमा मे बाध पाना भी मुमकिन नही होता।

—रजना भरतीया

भूमिका

रजनाजी की कविताओं में हम विभिन्न भाव, विचार एव चिन्तन का दर्शन करते हैं। अपने पिता के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए रजनाजी ने जो कविता लिखी है, उस कविता से सभी पाठक पढ़त हुए एकात्मबोध का अनुभव करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। पिता के प्रति सतान का प्रेम श्रद्धा एव गहर लगाव की भावना का जो चित्रण रजनाजी ने किया है, वह किसी भी पुत्री की अपने पिता के प्रति भावना से मेल खाता है।

वह मासूम-सी एक अल्हड़ कली थी
नाजो-अदा स बहुत वह पली थी
थामे हुए अपने बाबुल की उगली
जीवन के पथ पर मगन हो चली थी।

कवयित्री ने अपनी कविताओं में सामाजिक जीवन की विसगतियों का भी चित्रण किया है, वहीं नारी की अस्मिता के बारे में भी 'कठपुतली' जैसी प्रतिनिधि कविता लिखी है। वर्तमान समाज में नारी की स्थिति कैसी है इसका उन्होंने मार्मिक चित्रण किया है—

धार्मिक मान्यताओं
लोक-लाज और नैतिकता से बधी
यह जन्मदात्री/तिल तिल कर जलती हुई
हर रूप में अपने अस्तित्व का/विसर्जन कर
कुल-परपराओं का करती है निर्वाह।

इसी तरह वैयक्तिक भावनाओ से बुनी हुई कविताओ मे कवयित्री ने अपनी कोमल अनुभूतियों का चित्रण किया है। ऐसी कविताओं में नये प्रतीकों के माध्यम से कम शब्दा में उन्होंने बहुत कुछ कहने का प्रयास किया है—

अहसास की कलम से
लिखी है चिट्ठी
धड़कनों के वरक़ पर।

डालकर स्पर्श के लिफाफे में

गजलो में जहा रोमानी जज्बातों को खूबसूरती के साथ पिरोया गया है वहीं आज के दौर के इसानी जिन्दगी के दर्दनाक मजर को भी रजनाजी ने सजीदगी के साथ चित्रित किया है। दोहरी जिन्दगी जी रहे लोगो की कलई खोलते हुए उन्होंने लिखा है—

शहरी जीवन जीनेवाले
उल्फत क्या जाने ये लोग
तन उजले मन के काले
दोहरे चेहरेवाले लोग

मजहब की रंजिशे न मिटा सके जिसे
इसानियत का दैरो हरम चाहिए
दुख-दर्द से किसी के न वास्ता कोई
लोगो को यहाँ ख़बरे गरम चाहिए

दूसरी तरफ विरह प्रतीक्षा त्याग आदि मानवीय भावनाओ को भी उन्होंने गजल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

अपने भी दिल को रोग ये लगा के देखिए
इस प्यार में दोनो जहा लुटा के देखिए
है गम मे भी कितना सुकू चाहो जो देखना
धडकन पे मोहब्बत का गुनगुना के देखिए

सख्या की दृष्टि से गीत सकलन में कम हैं मगर गुणवत्ता की दृष्टि से प्रशसनीय है। गीत के जरिए कृष्ण भक्ति की भावना का मोहक चित्रण रजनाजी ने किया है।

तेरी छवि मन भाई तोसे प्रीत लगाई
अपने चरणो मे बसा ले मोहे ओ कन्हाई
सारे जग से निराले जसोमती के दुलारे
कान्हा धेनु चराए चोरी चोरी माखन खाए
नित रचे नई लीला मेरे लीलाधारी

कविता, गजल एव गीत—इन तीनो विधाओ के पडावो से होकर पूरा होता है 'अहसास का सफर'। इस सफर मे शामिल पाठकगण मेरी तरह ही महसूस करेंगे कि अत्यन्त ही सवेदनशील हृदय के साथ कवयित्री ने हृदयग्राही रचनाएँ प्रस्तुत की है जो उनके उज्ज्वल भविष्य की सभावनाओं का परिचायक भी है। रचनाओं में प्रवाह ताजगी एव विशिष्ट शैली खास गुण है, जो पाठको को सम्मोहित करेंगे, वहीं सोचने के लिए मजबूर भी करेंगे।

—दिनकर कुमार

अनुक्रम

कविता



गीत

ग़ज़ल



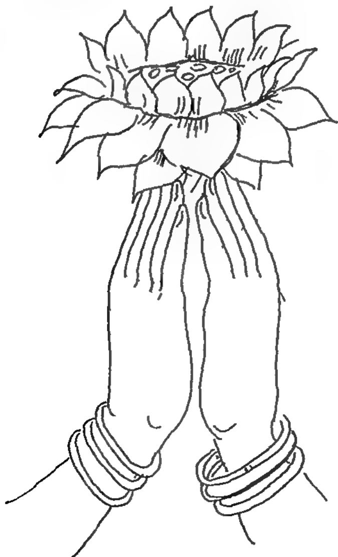


पहला खण्ड · कविता

तुम्हे हमारा नमन

कौन कहता है तुम नहीं हो,
तुम हो, आज भी यही हो।
हर पल रहते हो साथ-साथ,
दिल मे धडकन बनकर,
आखो मे ज्योति बनकर,
हवा मे महक बनकर,
कानों मे गूज बनकर,
हाथो मे स्पर्श बनकर,
होठो पे गीत बनकर,
फरक सिर्फ इतना हे
पहले साकार थे,
अब हो निराकार।
'गीता' मे भी यही लिखा है—
आत्मा अमर है, शरीर हे नश्वर
शरीर मरने से आत्मा कहा मरती है,
जो आत्मरूप है वह कहा जा सकता हे।
वह यहीं है, यहीं कही हे,
तुम्हारे पास, बहुत पास,
सिर्फ अहसास की जरूरत हे।
अहसास की इंद्रियो से महसूस करो
और उसे अपने अदर आत्मसात् करो

फिर देखो, वह वैसा ही है,
साकार से निराकार है,
उस निराकार को पहनाते हम
श्रद्धा सुमन हार हे।
जिसकी छाया मे,
पनपा ये परिवार है।
हे जन्मदाता,
हम सब तुझे करते
शत-शत नमस्कार हे।



कली की व्यथा

वह मासूम-सी एक अल्हड़ कली थी
नाजो अदा से वहुत वह पली थी।
थामे हुए अपने बाबुल की उगली
जीवन के पथ पर मगन हो चली थी।
न विचलित हुई वह थपेड़ों से दुख के
आत्मशक्ति की ऐसी विरासत मिली थी।
थी कछुए की भाँति कवच मे सुरक्षित
छाया मे जिसके हर विपदा टली थी।
थी रौनक जमाने की कौड़ी बराबर
यह दहलीज उसको जहा से भली थी।
अचानक छिना वह कवच उसके तन से
कुदरत के हाथो गई वह छली थी।
ममता की टहनी से होके जुदा वह
हो बेआसरा खाक में जा मिली थी।
उसके लिए अब निरर्थक था जीवन
मगर चाहकर मोत किसको मिली थी।
वह पगली मगर अपने रहवर की खातिर
भटकती फिरी दर-ब-दर हर गली थी।
किया होके मजबूर सुलह जिन्दगी से
कि यादो की उसको धरोहर मिली थी।
वह मासूम-सी एक अल्हड कली थी
जो बाबुल के दामन मे फूली-फली थी।

आहो मे असर भी होता है

इस दोर का इन्सा रव मेरे,
ये कौन-सी भाषा बोलता है
जज्बात के स्वर्गिक सुख को भी
दोलत के तराजू मे तोलता है।
उस मा का भी सोदा अक्सर
करने से नही हिचकता है
जिसकी लोरी सुन सोता है
जिस गोद मे आखे खोलता है।
वह महज दिखावे की खातिर
हर खून के रिश्ते ढोता है
निज हित मे उनकी लाशो पे
सपनो के महल सजोता है।
सच पूछिए अपने घर मे ही
अब दाव लगी है इज्जत पर
बाहर की बाते जाने दो अब
घर मे दु शासन होता है।
अपनो के हक को छीन के वह
क्यो पाप के धन पर इतराता है
कडवा है पर ये सत्य है कि
आहो म असर भी होता है।



अधूरा स्वप्न

आज मेने उन्हें देखा था।
यह ही थे—हा, यह ही थ,
इसमे कोई शक नहीं है।
वही रग-रूप था,
वही छवि थी,
हाठो पर चिरपरिचित मुस्कान खिली थी,
आखो में बेपनाह चाहत थी,
होठ कुछ कहने के लिए थरथराए थे,
उनकी बाहे धीरे से उठी थीं,
मे जडवत् उन्हे देखती रह गई,
मेरे कठ अवरुद्ध हो गए,
कुछ अजीब-सी दशा थी,
मेरे दिलो दिमाग की,
आज मेरे प्राणाधार,
मेरे समक्ष खडे थे।
जी चाहा उनके सीने से लगकर खूब रोऊ।
अपने मन की सारी गाठे खोल दू,
उनसे पूछू, मुझे किसके सहारे छोड गए।
परन्तु,
दोनो मान, एक-दूसर को एकटक देखते रहे।
दोनो तरफ आखो मे आसुओ का सेलाव था।

कदम उठे ही थे,
हाठ खुले ही थे,
वाह फेली ही थी,
कि अचानक सब कुछ विलीन हो गया,
जेसे सृष्टि का अत हो गया हो।
वात होठो पे आते-आते रह गई,
ये सब क्या हो गया?
क्या मे स्वप्न देख रही थी?
हा, ये स्वप्न ही था।

आख खुलते ही मे सच क धरातल पे थी।
विल्कुल तनहा, अधेरे मे लिपटी हुई,
अधूरे स्वप्न से मिली कसक के साथ।
वेचैन, चारो तरफ उन्हे ढूढती मेरी आखे,
अथाह वेदना के समन्दर मे डूवता मेरा मन,
मिलन की पूर्णता की आस लिये,
मुझे ले गए फिर से स्वप्निल ससार म।







रिश्ता

तेरे अस्तित्व से अलग होकर भी
तेरे ही अस्तित्व का हिस्सा हूँ मे।
तुझमे ही मेरी पहचान छिपी हे
वरना कुछ भी नही हूँ मे।
गर तुम हो विशाल हिमालय
तो तुम्हारे अतर से निकली जलधारा हू मे।
गर तुम हो जीवनदायिनी धरा
तो तुम्हारी कोख स फूटा अकुर हू मे
गर तुम हो गहरे नील सरोवर
तो उस जल मे तेरती मीन हू मे।
गर तुम हो विचरते घन बादल
तो तुममे समाई नन्ही बूद हू म।
गर तुम हो माली उपवन के
तो उस उपवन मे खिली कली हू मे।
गर तुम हो विस्तृत आसमान
तो नभ म उडता पखेरू हू म।
गर तुम हो कल्पवृक्ष
तो उससे लिपटी लता हू मे।
हर रूप सजीवनी हे तुम्हारा
मेरे जीवन का आधार।
ये सच हे, तुझ विन अस्तित्व नहीं हे मरा

फिर भी अस्तित्वहीन नही हू मे।
तुमसे बिछुडकर अपूर्ण हू,
सपूर्ण नही हू म।
जेसे अपने अस्तित्व के साथ एक नदी
सागर से मिलकर होती सपूर्ण हे।
यदि तुम हो वह सपूर्ण सागर
तो उसमे समाहित नदी हू मे।



एक पल

एक पल,
कहने को सिर्फ एक पल है,
समय का एक न्यूनतम अश
अपने न्यूनतम अस्तित्व के बावजूद
स्वय मे होता सपूर्ण है।
समय का यह निर्णायक क्षण
कसता है हर तथ्य को अपनी कसौटी पर
जीवन से मृत्यु तक
सृजन से सहार तक
आदि से अत तक
प्रकृति के हरेक रूप को
करता है प्रभावित
उसमे घटित प्रत्यक कार्य के
निष्कर्ष का करता है निर्धारण।
यही एक पल या क्षण,
करता है फैसला
हार या जीत का
जिन्दगी या मौत का
आदि या अत का।



एक सवाल



नारी, हे आदिशक्ति
तेरे रूप अनत ह।
तू अन्नपूर्णा है, लक्ष्मी है,
धरती की तरह सहनशील हे
ममतामयी मा हे
स्नेहमयी वहन हे
प्रेममयी प्रेयसी है
कही प्यारी वेटी
तो कही अतरग सखी हे।
तेरी महानता का करते
वेद बखान हे,
'जहा होती नारी पूजा
वही वसत भगवान् हे।
परन्तु,
तेरे गरिमामय रूप के पीछे
तुम्हारा ही यह केसा वीभत्स रूप हे,
जो चाद मे दाग की तरह
तेरे अस्तित्व को करता गाण हे।
क्या हाता शापित तरा ही वजूद
तेरे अपने ही हाथा से?
क्या चढती ह आहुति किसी गरीव की

जब निकलती है कहीं
अरमानो की अर्थी
तो दिल से एक आह-सी निकलती है
कि काश!
न बने कोई नारी दुल्हन
फिर किसी दुल्हन को जलाने के लिए।

दुविधा

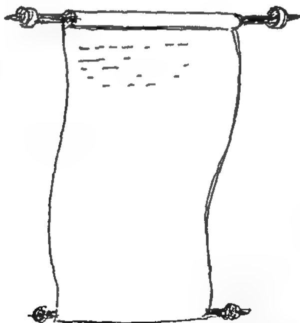
सोचती हू अक्सर
यह कैसा रिश्ता है,
प्यार से छलकते गागर मे
यह कैसी रिक्तता है?
कुछ खोने का डर है
तो पा लेने की निश्चितता है,
अवहेलना अपनो की है
तो गैरो का वरण है।
सयोग और वियोग का
यह अद्भुत सगम है,
रिश्ते के इस निर्माण-क्षरण मे
फसा दुविधाग्रस्त मन है।



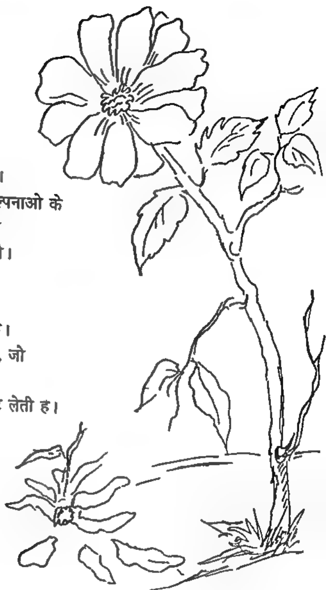
सदेश



अहसास की कलम से,
लिखी हे चिट्ठी
धड़कनो के वरक पर।
डालकर स्पर्श के लिफाफे मे,
भेजा हे तुम्हे,
मूक निगाहो से।
प्रियवर,
जवाव देना।



जीवन-मृत्यु



जीवन भोर है,
एक नये युग की।
आशाओ ओर कल्पनाओ के
सतरगे स्वप्न लिये
सघर्षमय सफर की।

मृत्यु साझ है,
मुकाम है सफर का।
गोद है उस मा की, जो
थके-हारे शिशु को
अक मे अपने समेट लेती ह।

ये जीवन

मानव जीवन
ईश्वर की असीम कृपा का प्रतीक हे।
अमानत हे उसकी
यह भोग नहीं, योग हे।
अपने लिए नहीं,
दूसरो के लिए हे।
सहार के लिए नही,
सृजन के लिए हे,
सत्कर्मो के लिए,
भगवद् वचनो के लिए हे।
जिसे सोपना है हमे
निष्कलक और बेदाग
अपने अंतिम समय
उस परमपिता को, जिसकी
यह अमानत है।



अनुभूति



तेरा लौट के आना

न थी उम्मीद,
न चाह थी
फिर भी, न जाने क्यो
तेरा लाट के आना,
अच्छा लगा।
बसेरा हो गया जेहन मे,
फिर से उन यादो का
जिन्हे एक अरस से
मे भुलाए बेठा था।
फूटा स्नेह-स्रोत,
अतर से मेरे,
ओर बह गए
सारे गिले-शिकवे।



तोड दो यह मौन



मोन तुम्हारा,
देता हे बुनियाद
उन कायकलापा को
जो तुम्हारे
नाम की ओट म
फल-फूल रहे ह
जो छल रहे हे
अतरग भावनाआ को
विश्वास को,
आस्था को।
कही कोइ अनिष्ट न ले ले
रूप हकीकत का
उठो,
तोड दा यह मोन
कर दो आवरणमुक्त
उस सच का
जो छिपा हे
परदे के पीछे।

प्रतीक्षा

जिन्दगी रत की मानिन्द
मुट्ठी स फिसल रही ह
पडाव है नजदीक
शाम की तरह ढल रही है
कहीं ढक न ल मात क
काल घने साए
आ जाओ
सिफ एक बार चले आओ
दरस की प्यासी इन आखो को
थोडा-सा कगर दे जाओ।



अविस्मरणीय



कहते है,
भूल जाओ उस
जो चला गया।
लौटकर नहीं आता कभी भी
कोई जाने वाला।
मिटा दो,
उन स्मृतिचिह्नो को
जो तड़पाए उनकी याद बनकर।
परन्तु,
कोई क्या समझाए
नासमझ लोगो को
कि जो बह रहा है
रक्त बनकर
शरीर क पोर-पोर म
जो धड़कता है
हर धड़कन के साथ।
क्या है आसान
उस भूल जाना?
यह है विद्यमान
जिस्म म
जान की तरह।









जुगनू

जजर हो रही हे मानवता
जीण-शीण हो गइ भावनाए
व्याप्त हे चतुर्दिशाओ म
गहन अधकार।
इस तमसपूण यामिनी के
हरण के लिए
सूय का असीमित प्रकाश
या किसी दीए का
सीमित प्रकाश
न हा तो क्या?
जनमानस क हृदय से उटी
उमग की एक किरण ही काफी हे
गहन तिमिर के हरण-हेतु
एक जुगनू ही काफी हे।



क्या यही आज़ादी है?

सुनते ह,
भारत को आज़ाद हुए
वर्षो वीत गए।
आज़ादी के लिए
अनगिनत लोगो ने दी है कुर्वानी।
इतिहास साक्षी है,
प्रत्येक उस घटना का
जो खून के कतरो से लिखी गई।
निरतर कठिन सघर्प के बाद
इन्सान गुलामी की वेडियो से
हुआ स्वतत्र, निर्भय
लेकिन,
क्या आप बता सकते हे
कैसी होती है आज़ादी?
क्या इसका कोई रग होता हे?
क्या रूप हे इसका?
इसका कोई अस्तित्व
हे भी, या नही।
शायद आपने देखी हो
लेकिन मने नहीं देखी।
क्योंकि,



आज भी हम डरी-सहमी-सी
ज़िंदगी जी रहे हे
नहीं कर सकते हम जीवनयापन
खुद अपनी शर्तो पर
आज भी हर गली, हर नुक्कड पर
खेली जाती हे खून की होली,
शोपित ओर प्रताडित हें
जनजीवन,
सिसक रही हे मानवता।
अगर यही आज़ादी हे तो
वडी वीभत्स ओर दर्दनाक है
ओर उस गुलामी से
कहीं वदतर हे
जिससे हमे
शहीदो की शहादत ने
मुक्ति दिलाई थी।



बडप्पन

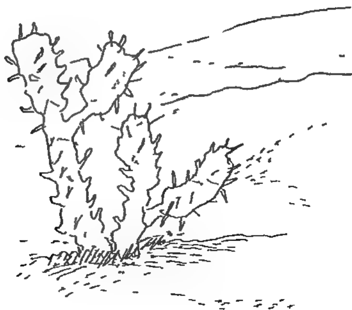


नही हे
इन्सान का वडप्पन,
उसकी अपार सम्पदा मे
उसकी शोहरत म
उसके स्वाथपूण कार्यो मे
ऐश्वय मे, तानाशाही मे।
उसका वडप्पन हे
उसके द्वारा दी गइ
दया मे, क्षमा म
उपकार मे, उद्धार म,
नि स्वाथ भाव से की गइ
सेवा मे,
ओर विशुद्ध चरित्र मे
जो उसे सच्चे मायने म
वडा बनाते ह।



मरुस्थल

मै मरुस्थल हू,
अतृप्त हू
मुझमे जहा सूर्य की
भीषण उष्णता हे,
वही चाद की
कोमल शीतलता भी हे।
मे भी प्रकृति की
अनुपम कृति हू।
तो, हे मेघ,
मुझसे यह विरक्ति केसी,
बरस जाओ
प्यार की फुहार बनकर
मेरे दामन मे
ओर मुझे
तृप्त कर दो।



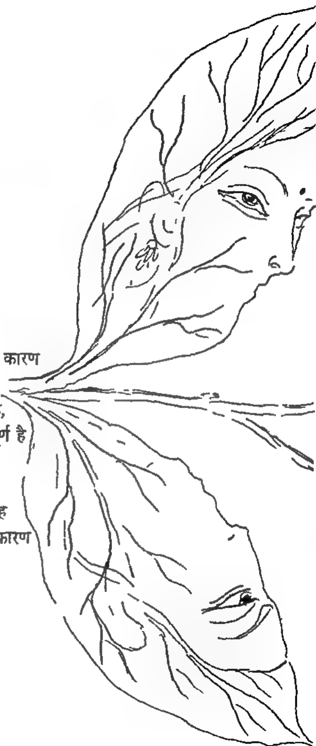
ए ज़िन्दगी



ए जिन्दगी
तू नियामत है
इबादत हे
एक अनमोल शे हे
लेकिन,
वक्त की दुश्वारिया म
इस कदर उलझकर
रह गया मेरा वजूद
जिसे मे जितना सुलझाती हू
उतना ही उलझती जाती हू
पर तू करके यकी मुझ पर
इतनी मोहलत दे देना
कि मे तेरा एहतिराम कर सकू
कुछ क्षण ही सही
तुझे जी भर के जी सकू।



दो कृतिया



रचनाकार की
अनुपम कृति ह दोनो।
दोनो ही रूप-सोन्दर्य
ओर गुणो की खान हे
पर,
एक अपनी सरचना के कारण
आजाद ख्याल हे,
सुरक्षित हे, ताकतवर हे,
स्वामित्व भाव से परिपूर्ण है
तो वही दूसरी
असुरक्षित हे,
आश्रित ओर असहाय ह
अपनी सरचना के ही कारण
सर्वदा खाती मात हे।

कठपुतली



डोर खीचने वाले हाथ चाहे कोई भी हो
कठपुतली की नियति ह नाचना
एक कठपुतली जो निर्जीव हे
नाचती हे रगमच पर।
दूसरी कठपुतली जो सजीव हे
बनी हुई हाड मास से
उसे नचानेवाले हाथ
बदलते रहते ह समयानुसार
कभी पिता, कभी पति ओर कभी पुत्र रूप मे
इच्छाओ और अनिच्छाआ के बीच
पिसती यह कठपुतली
प्रतिभावान हे, सामर्थ्यवान हे
धरती की तरह सहिष्णु हे
यत्रणाओ की अनकही दास्ता है
डोर से कटकर इस समाज मे जीना
इसके लिए अभिशाप हे।
धार्मिक मान्यताआ
लोक-लाज ओर नेतिकता से वधी
यह जन्मदात्री
तिल-तिल कर जलती हुइ
हर रूप मे अपने अस्तित्व का
विसर्जन कर
कुछ परपराओ का करती हे निर्वाह।

मा का चितन

वचपन की देहरी
लाघती हुई
किशोरी विटिया की आखो मे,
आज मैने
कुछ अजीब-से भाव देखे
उनमे छटपटाहट थी, बेवसी थी
क्रोध और विद्रोह के अस्पष्ट-से
मिले-जुले भाव थे
वह खुद पे लादी
वदिशो को तोड
उडना चाहती थी
स्वच्छद, निर्भय
वह बहना चाहती थी
चचल सरिता की तरह।
लगा जेसे
मेरे अतीत की किशोरी
मेरे समक्ष आ खडी हुई हे
बहुत-से सवाला का जवाब लिये
मुझे विटिया की पीडा से
अवगत कराती हुई।
बेटी की पीडा के अतिरिक्त



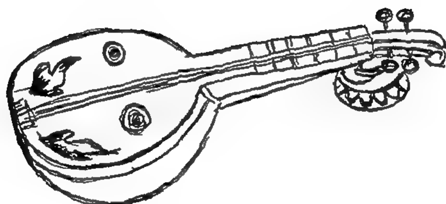
मैंने पहली बार
अनुभव किया
उस मा की पीडा को
जो करती ह परवरिश
अपनी सतान की
कुम्हार के कुभ की तरह,
जिसकी चोट म भी
सहारा होता हे।
मेरी यह पीडा
बिटिया भी समझेगी
जब वह
एक नन्ही सी
बिटिया की मा बनेगी।

दरख़्त

भूली नही मे
याद है मुझको
वह हर लम्हा
जो तुझे छू के गया।
बीतते वक्त के साथ
तेरी यादे
मेरे ज़ेहन मे
ज्यादा साफ ओर परिपक्व हो रही हे।
अक्सर कचोटती हे
तुम्हारी एक बात
जब कभी तुम हमसे होते थे
बहुत नाराज़ ओर हताश
तब कहा करते थे,
"बुजुर्ग-रूपी दरख़्त का
प्रागण मे होना
सोभाग्य की बात हे।
जो रहते है
इसकी छाया म जीवनभर
नहीं जान पाते इसके महत्त्व को,
मगर, यह केसी विडबना हे
वही समझते है इसकी कीमत

जिनके आगन मे
यह दरख्त नही।"
तुम्हारे कथन की सच्चाई
हमारी समझ मे बडी देर से आई
तुम्हे खोकर ही हम जाने
तुम्हारे भावा की गहराई।





दूसरा खड · गीत

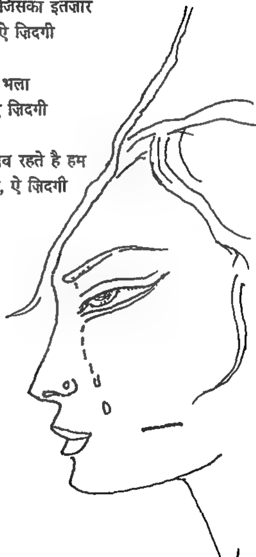
एक

विना किसी के प्यार के कैसे जिए, ऐ ज़िदगी
हसकर जिए, रोकर जिए, कैसे जिए ऐ ज़िदगी

दिल की धडकन हर घडी करती है जिसका इतज़ार
अव तलक न आए वो, कैसे जिए, ऐ ज़िदगी

दोष दू तकदीर को या बैठकर रोऊ भला
प्यार गर समझे न वो, कैसे जिए, ऐ ज़िदगी

लोग कहते हे कि कुछ गुमसुम-से अव रहते है हम
अश्क-ए-गम गर ना पिए, कैसे जिए, ऐ ज़िदगी



दो

बदरा सजन के कूचे मे जाना
मेरे पिया को हाल सुनाना
कहना कि मीत तेरा तुझको बुलाए
मन कुम्हलाए हो—

तुझ बिना सूनी मोरी डगर
तेरे दरस को तरसे नज़र
लागे है सब मुझे अब तो पराए
मन कुम्हलाए हो—

बिरहा मे तेरी जलू दिन-रैन
किस विध जी को आए न चैन
हुआ क्या कसूर मेरा काहे सताए
मन कुम्हलाए हो—

असुवन से भीगा मोरा दामन
लगी है सिसकने हर धडकन
बेचैन है जिया काहे तडपाए
मन कुम्हलाए हो—

तीन



बाबुल क्यों थे परनाई
दूर देस ब्याही
म्हारा निस दिन बरसे नेन
बाबो सा म्हारा निस दिन बरसे नेन

खेली-कूदी बाबुल आगन म थारे
थे तो किया म्हारा लाड घणा रे
थारे बिन कुण म्हारा लाड लडासी
म्हारे जिया म हैं घणी रे उदासी
थे तो गोद खिलाया
म्हाने रोता न हसाया
कइया पासू जी थारे बिन चेन

क्यू थे म्हारी सुध बिसराई
हो गई के मे इतनी पराई
भेज द्यो बाबुल कोई तो संदेशा
जल्दी मिलन हो जतन करो ऐसा
इब तो कुण समझावे
थारी यादडली सतावे
इब मे किन सुनाऊजी के बेन

चार

गाती है गीत कोयलिया
मधुर मिलन के पिया
तुम परदेश गए
लागे न मोरा जिया

सावन आए मेह बरसाए
प्यास जिया की बढती जाए
हर पल तेरी याद सताती
लिख-लिख हारी तुझको पाती
आई न कोई खबरिया

मोरी अटारी जब कागा बोले
आएगे सजन मन खाए हिचकोले
मै विरहन दिन तक-तक हारी
नित उठ देखू राह तिहारी
आओगे कोन डगरिया

पनघट सूना, आगन सूना
पिया बिना मोरा जीवन सूना
मन-वीणा के तार है टूटे
मुझसे मेरे अपने रूठे
लागी है किसकी नजरिया



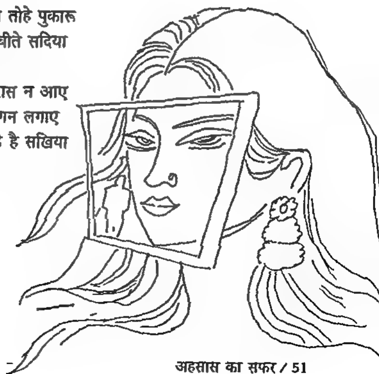
पांच

कारी रतिया, जागी अंखिया
आ जाओ साजन करे कुछ बतिया

गरजत बरसत मेह सारी रैना
जीया मोरा कापे, रोए मोरे नैना
उसपे वेरन चमके बिजुरिया

बैठ झरोखे राह निहारू
तज के लाज मे तोहे पुकारू
पल बीते जेसे बीते सदिया

बिन तेरे कछु रास न आए
शीतल चदा अगन लगाए
नाम से तेरे छेडे है सखिया



छह

तेरी छवि मन भाई, तोसे प्रीत लगाई
अपने चरणो मे बसा ले, मोहे ओ कन्हाई

सारे जग से निराले, जसोमती के दुलारे
कान्हा धेनु चराए, चोरी-चोरी माखन खाए
नित रचे नई लीला मेरे लीलाधारी

धन्य हुआ ब्रज धाम, खेले राधा सग श्याम
गोपी ग्वाल सुबह-शाम, भजते राधे श्याम-श्याम
बिकते प्रेम के मोल पीताबरधारी

ऐसी भक्ति रास आई, बन गई जोगन मीराबाई
नरसी, सूर, करमाबाई, सबने महिमा तेरी गाई
बडे भक्तवत्सल है मेरे गिरधारी

जमुना तीरे आ जा, ओ ब्रज के राजा
मीठी तान सुना जा, गीता-ज्ञान सुना जा
लेके आस आई मोहन तेरे दर्शन की



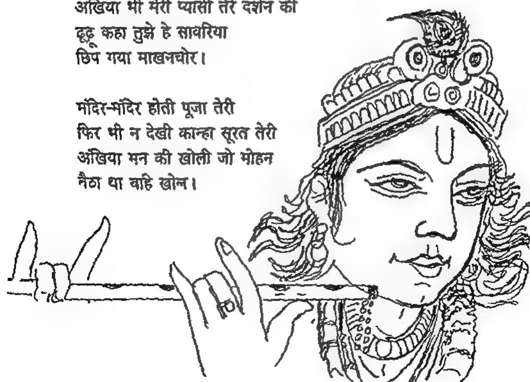
सात

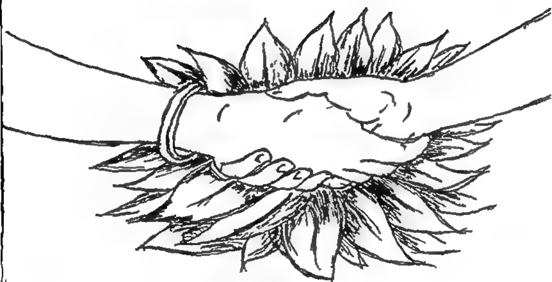
कृष्णा, ओ कृष्णा
बीच भवर मत छोड।

सोप दी है मेने तुझे ये जिन्दगानी
मुक्ति है हाथो तेरे बात मेने मानी
रखना शरण तू हे कानूडा
रखना शरण चितचोर॥

सुनी पुकार तूने सब भक्तन की
अँखिया भी मेरी प्यासी तेरे दर्शन की
ढूढू कहा तुझे हे सावरिया
छिप गया माखनचोर।

मंदिर-मंदिर होती पूजा तेरी
फिर भी न देखी कान्हा सूरत तेरी
अँखिया मन की खोली जो मोहन
नैठा था वहि खोल।





तीसरा खंड ग़ज़ल



एक

चाहत का अपनी उनसे मे इज़हार ता कर लू
इक वार फिर उस बेवफा से प्यार तो कर लू

यादो में जिसके अब भी गुजरती हे जिदगी
कुछ पल ही सही उनका इतजार तो कर लू

कैसा सितम हे उनसे जुदाइ का वक्त हे
दीदार उनका फिर से म इक वार तो कर लू

केसा सुकून, गर मेरी यादो मे वो नही
यादो से उनकी दिल को बेकरार तो कर लू

हो जाए न हर गुल को अपने प्यार की खबर
पहले मे हवाओ को राज़दार तो कर लू

दो

दिल से अब उल्फत तेरी जाती नहीं, जाती नहीं
चैन भी रहा नही अब नीद भी आती नही

कर लिया मजबूत हमने अपने दिल को इस क़दर
जिदगी की उलझने अब मुझको रुलाती नहीं

दिल की बगिया वो है जो एक बार मुरझायी अगर
लाख आ जाए बहार फिर ये मुस्काती नही

एक यही हसरत, रहे बस तू नजर के सामने
शै कोई अब इस जहा की मुझको लुभाती नहीं

बेमिसाल ज़िदगी है, यू न ज़ाया कीजिए
इश्क न हो इसमे तो रगीनिया आती नही



तीन

करती थी इतज़ार मगर था न एतबार
आओगे ज़िदगी मे मेरी फिर से एक बार

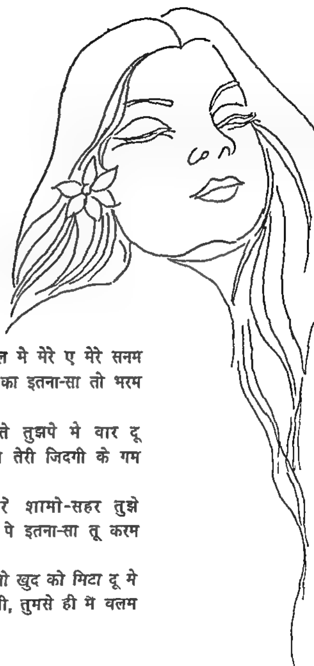
कहता है दिल कि थाम लू दामन मे आपका
फिर खो न दू मे आपको पाकर के एक बार

आया न फरक कुछ भी चाहत मे हमारी
इस दिल को तुमने तोडा है वेसे तो कई बार

तोहफा समझ के प्यार का तेरे रज ओर सितम
ढाला है अपने अश्क मे मेने हरेक बार



चार



आ जा समा जा दिल मे मेरे ए मेरे सनम
रख ले तू मेरे प्यार का इतना-सा तो भरम

सारे जहा की नेमते तुझपे मे वार दू
दामन मे डाल लू मे तेरी जिदगी के गम

देखे ये मेरी नजरे शामो-सहर तुझे
कर दे मेरी निगाहो पे इतना-सा तू करम

तेरा हो इक इशारा तो खुद को मिटा दू मे
तुमसे ही मेरी जिदगी, तुमसे ही मे वलम

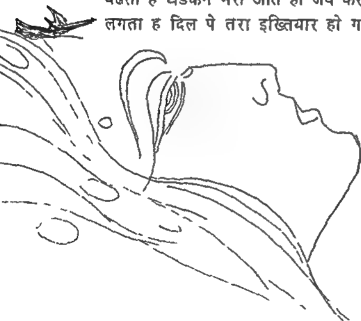
पाच

जो इश्क म गुजरा ग यादगार हो गया
आबाद इसस दिल क्रा य ससार हो गया

थामा जब अपन हाथ म तून ये मरा हाथ
उस पल से जिदगी स मुझे प्यार हो गया

तुम जा नही थे जिदगी मे कुछ मजा न था
तुम आ गए मासम भी खुशगवार हो गया

बढती ह धडकन मरी आते हो जब करीब
लगता ह दिल पे तरा इख्तियार हो गया



छह

चराग़ उसने तेरी यादो के जलाए होगे
अश्क छुपकर तेरी यादा मे 'वहाए होगे

तेरे सितम को तेरा प्यार समझकर उसने
हरेक जख्म को सीने मे छुपाए होगे

दरो-दीवार पे लिखकर के हाले-दिल अक्सर
गीत उल्फत के वो गाकर के सुनाए होग

तेरे आमद की तो उम्मीद नही थी लेकिन
अपनी पलके तेरी राहो मे बिछाए होगे।



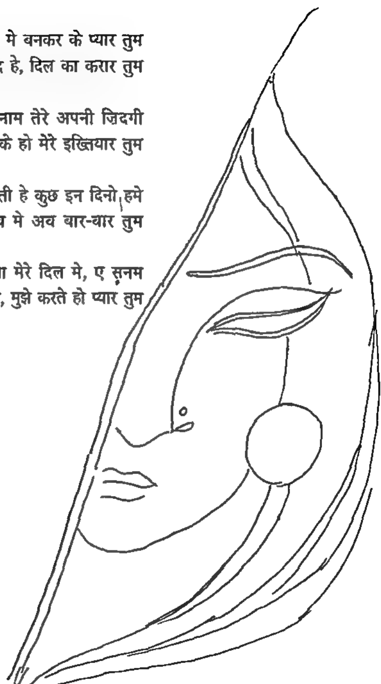
सात

वसे हो इन निगाहो मे बनकर के प्यार तुम
दिल मे तुम्हारी याद हे, दिल का करार तुम

लिख दी हे हमने नाम तेरे अपनी ज़िदगी
दिल पर तो कर चुके हो मेरे इख़्तियार तुम

फ़ुरसत ही नही रहती हे कुछ इन दिनो हमे
आते हो मेरे ख़्वाव मे अव बार-वार तुम

इतनी-सी हे तमन्ना मेरे दिल मे, ए सनम
इक वार ही कह दो, मुझे करते हो प्यार तुम



आठ

ख़ामोश लब ये तेरे, ख़ामाश हे फ़ज़ाए
कहती हे बात दिल की तेरी हसी निगाहे

चेहरे पे बिखरी जुल्फे, हे चाद बादलो म
महबूब, तुझको मेरी नजर ये लग न जाए

मिलते ही नज़र उनकी, पलको का झुक-सा जाना
प्यारी-सी इस अदा पर कहो कोन मिट न जाए

कितना हसी हे मजर, वो मेरे रु-ब-रु है
मेरे खुदा रहम कर, कही दम निकल न जाए

कभी हम भी कह न पाए, कभी तुम समझ न पाए
हमे तुमसे हे मोहब्बत, केसे यकी दिलाए



नौ

जो तनहाइयो के सहारे न होते
तेरी याद मे दिन गुज़ारे न होते

जहा इक बसाना तो मुश्किल नहीं था
जो तेरी जफ़ाओ के मारे न होते

न होते अगर तेरी चाहत मे पागल
तो हम आज इतने बेचारे न होते

हे आदत मे तेरी सितम ढाते जाना
जो मालूम होता पुकारे न होते

दस

अपने भी दिल को रोग ये लगा के देखिए
इस प्यार मे दोनो जहा लुटा के देखिए

हे गम मे भी कितना सुकू चाहो जो देखना
धडकन पे मोहब्बत को गुनगुना के देखिए

ठुकरा दिया हे जिसने तेरे प्यार मे सब कुछ
चाहत म उसकी खुद को भी भुला के देखिए

तेरी जफा के मारे भी लोट आएगे एक दिन
बस प्यार से इक बार उन्हे बुला के देखिए



ग्यारह

अगर मुझको तेरा सहारा न होता
ज़माने मे अपना गुज़ारा न होता

जुदाई मे तेरी सनम मर ही जाते
अगर तूने मुझको पुकारा न होता

घिरे होते गम के भवर मे अभी तक
जो यादो का तेरी किनारा न होता

बया राज़े-दिल कर चुके होते अब तक
जो हालात ने हमको मारा न होता



बारह

धड़कता है दिल मीत तेरे लिए
है लब पे मेरे गीत तेरे लिए

वीराने मे रौनक तेरे दम से है
है कलियो का सगीत तेरे लिए

तुझे चाहना गर ख़ता है सनम
बदल देगे हर रीत तेरे लिए

है लब पे तेरा नाम, आखों में सूरत
उमर यू गई बीत तेरे लिए

न होगे जुदा राहे-उल्फत मे हम
हर एक जीत हे जीत तेरे लिए



तेरह

तुमसे बिछडके दिल ये परीशा है आजकल
क्यू दुश्मनो के घर में वो मेहमा है आजकल

क्यू पूछते हो हमसे जुदाई का फ़साना
सबकी जुबा पे बस ये दास्ता है आजकल

अपनी दीवानगी को भी हम न छिपा सके
हर कोई अब शहर मे राज़दा है आजकल

वो लाख मिन्नतो पे भी कुछ बोलता नही
लगता है जेसे यार बेजुबा है आजकल

ये किस ख़ता की आपने दी है मुझे सज़ा
कैसे कहू कि क्यू वो बदगुमा है आजकल



चौदह

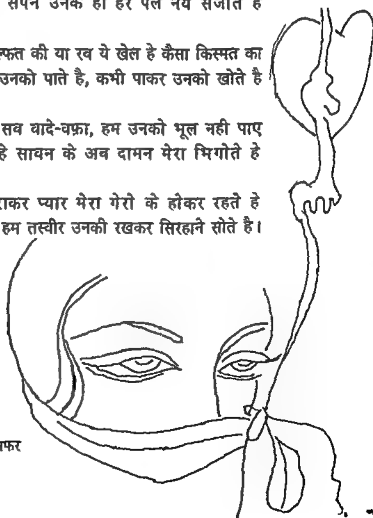
जब भी तनहाइ मे तेरी यादो के सग हम होते हे
ये सारा आलम सोता है और हम छुप-छुपकर रोते है

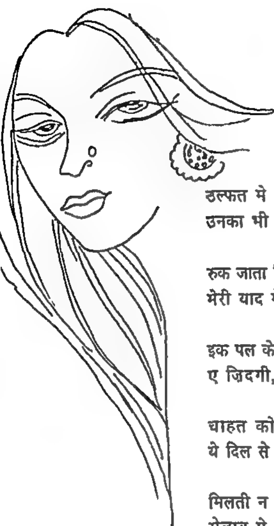
वो जिसने देखा नही मुझे मुडकर भी इक बार कभी
क्यू नैन मेरे सपने उनके ही हर पल नये सजोते है

इस राह मे उल्फत की या रब ये खेल हे कैसा किस्मत का
कभी खोकर उनको पाते है, कभी पाकर उनको खोते है

वो भूल गए सब वादे-वफ़ा, हम उनको भूल नही पाए
वो बीते लम्हे सावन के अब दामन मेरा भिगोते हे

वो तो ठुकराकर प्यार मेरा गेरो के होकर रहते हे
पर आज भी हम तस्वीर उनकी रखकर सिरहाने सोते है।





पन्द्रह

उल्फत मे हमारी गर इतना-सा असर होता
उनका भी दिल हमारी चाहत की नजर होता

रुक जाता हिचकिया का ये सिलसिला भला क्यू
मेरी याद मे गर उनका बीता हर पहर होता

इक पल के लिए तुझको बिलकुल ही भूल जाते
ए ज़िदगी, गर उनके आग़ोश मे सर होता

चाहत को हमारी गर मजूर किया होता
ये दिल से दिल का कितना हसीन सफर होता

मिलती न खुदा से गर ये प्यार की नेमत तो
सेलाब मे फिर ग़म के डूबा हर शहर होता

ए दोस्त बदल जाते मायने ज़िदगी के
नाकामियो का तूने पिया जो ज़हर होता

मेरे दिल की तडप को फिर शायद वो समझ पाते
उनका तडप के बीता गर शामो-सहर होता

सोलह

रु-ब-रु थी जिंदगी पर हम समझ न पाए
दिल ने दिल से बात की पर हम समझ न पाए

चाहते-इजहार उसने किया बज्म मे
मुख्तसर-सी बात थी पर हम समझ न पाए

धडकनो की ताल पे जो छेडा साजे-दिल
उसमे धुन थी प्यार की पर हम समझ न पाए

उन निगाहो मे छिपा इकरारे-इश्क था
इक नजर की बात थी पर हम समझ न पाए

हमसे बेरुखी और गैरो पे इनायत
उनकी दिल्लगी थी पर हम समझ न पाए



सतरह

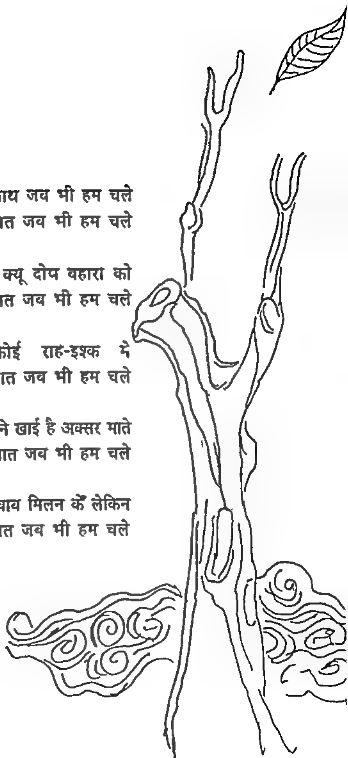
मिला न हमको तेरा साथ जब भी हम चले
तनहा कटे मेरे दिन-रात जब भी हम चले

साथ छोड़ा पतझड़ ने क्यूं दोष बहारों को
सावन मे न हुई बरसात जब भी हम चले

संगी ना साथी कोई राह-इश्क मे
संग थी यादो की बारात जब भी हम चले

हर दाव पे जीवन मे हमने खाई है अक्सर मातें
बिछी थी शतरंजी बिसात जब भी हम चले

हसरत से देखे हमने ख़्वाब मिलन के लेकिन
मिली जुदाई की सौगात जब भी हम चले



अठारह

ये सच है कि दिल का वो मेहमान है
मगर मेरी चाहत से अनजान है

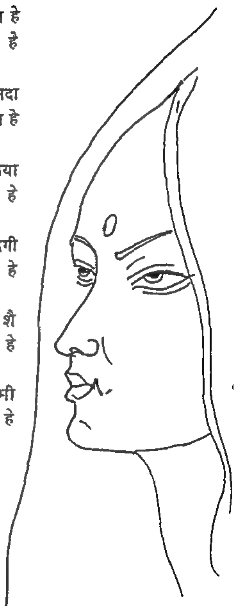
जो आखो मे रहता था सबकी सदा
क्यू मुश्किल आज उसकी ही पहचान है

जिधर भी गया बाटता ही गया
वो मालिके-दोलते-मुस्कान हे

ये किस मोड पर लाई है जिदगी
न किश्ती, न साहिल, न तूफान हे

थी रगीन जिससे ज़माने की हर शै
मगर उसके बिन अब ये वीरान हे

जिसे मेने देखा नही हे कभी
मेरी शायरी का वो उन्वान हे



उन्नीस

जो साथ तेरे बीता मुझको गुज़रा वो ज़माना याद हे
मिलते ही नज़र शरमा के तेरा पलको का झुकाना याद है

है आज भी खुशबू बसी हुई उस गुल की हर पखुडिया मे
भेजा था छिपाके सबसे जो मुझे वो नज़राना याद हे

था शोखी ओर शरारत से हर बात पे तेरा मचल जाना
फिर इठलाकर दातो मे वो पल्लू का दबाना याद हे

हम-तुमसे जहा तुम हमसे जहा अक्सर आकर के मिलते थे
कुछ याद करो क्या तुमको भी अपना वो ठिकाना याद हे



इक दिन था जब हम मिलने की सो-सो तदबीरे करते थे
जो हमने बनाया था मिलकर हर एक बहाना याद हे

?

इक्कीस

पतझड का था सूनापन मेरे जीवन म
बनकर तुम आए सावन मेरे जीवन मे

छाए बादल आखो मे, बरसात नही
कैसी ये अनबुझी अगन मेरे जीवन मे

कितने सुकू से थे हम इक तेरे आने से
रहा नही अब चैन-ओ-अमन मेरे जीवन म

सज़ा तडपने की ये भला हर घडी इसे क्यू
है कब तक काटो की चुभन मेरे जीवन मे

लम्हा-ए-जिनगी मे तेरे साथ जीऊ
लगी है बस एक यही लगन मेरे जीवन मे



बाईस

मुझे लोटा दे वो हयात घडी भर के लिए
हो जिसमे प्यार की सोगात घडी भर के लिए

कश्ती-ए-जिनगी भी डूबे तो गम न हो कोई
जो थाम ले तू मेरा हाथ घडी भर के लिए

जमाल-ए-हुश्न पे ए नाज़नी गुरूर न कर
ख़ुदा ने वख्शी ये ख़ेरात घडी भर के लिए

वाद मुद्दत के मिले ह वहुत नसीव से हम
न करो कोई सवालात घडी भर के लिए

न कुछ कहा, न सुना, वात दिल की दिल मे रही
हुई थी उनसे मुलाकात घडी भर के लिए

लोट के फिर नही आएगे तेरे शहर कभी
कीजिए कुछ तो हमसे वात घडी भर के लिए



तेईस

ए इश्क तेरी नजरे-करम चाहिए
जीने के लिए कुछ तो भरम चाहिए

बेकार हे यू हुस्न का पर्द नशी होना
अदब के लिए आखो की शरम चाहिए

जिस्मों के मेल पे रखे जो इश्क की बुनुयाद
हर कूचे मे उस शख़्स को हरम चाहिए

सैलाब म नफरत के डूबे इस शहर मे
चाहत का इल्म दे वो धरम चाहिए

मजहब की रंजिशे न मिटा सके जिसे
इसानियत का दैरो-हरम चाहिए

दुख-दर्द से किसी के न वास्ता कोई
लोगो को यहा ख़बरे गरम चाहिए